मेरी कहानी
मेरी जुबानी

संपादक
सुबोध कुमार मिश्र

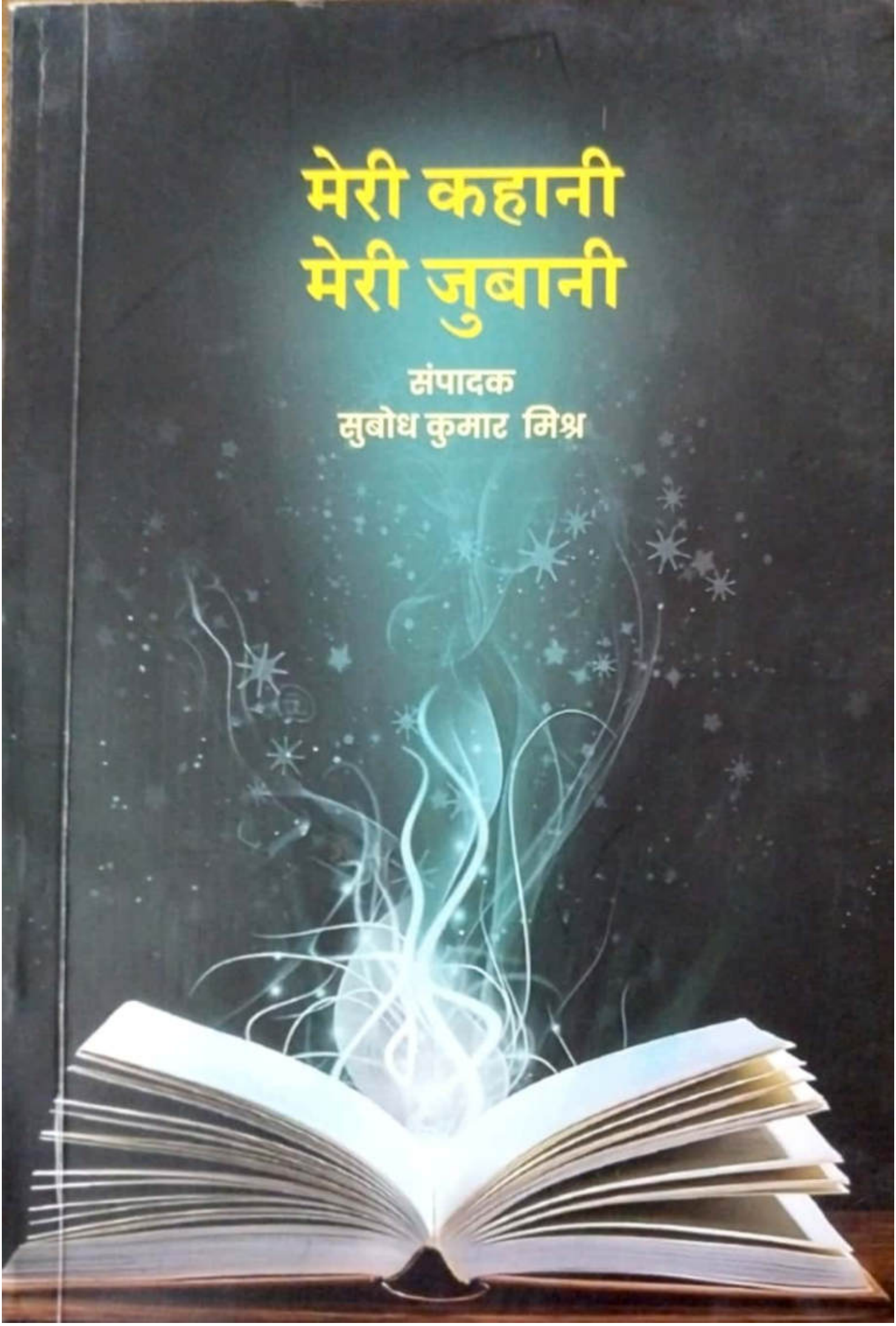

Scanned by CamScanner

संस्मरण का आधार हमारी स्मृतियां हमारी यादें हुआ करती हैं। इसमें सजीव पात्रों के बाहरी रूप के साथ-साथ आंतरिक चरित्र का भी वर्णन रहता है। वास्तविक होने के कारण इसमें भावनात्मक पक्ष अधिक स्पष्टता से उभर कर आते हैं।

संस्मरण में स्मृतियों का वर्णन कल्पनाओं पर आधारित नहीं होता है। इसमें केवल उन्हीं घटनाओं या प्रसंगों का जिक्र होता है जो पूर्व में घट चुकी होती हैं और मस्तिष्क में कहीं गहरे तक अपनी पैठ बना चुकी होती हैं।

सच्ची घटना होने के कारण पाठक पर इसका गहरा असर देखा गया है। पाठक स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस करता है, आत्मविश्लेषण करता है तथा स्वयं में आवश्यक परिवर्तन करते हुए अपना भविष्य सँवारने में लग जाता है।

सुबोध कुमार मिश्र

विद्योत्तमा फाउंडेशन, नाशिक

Scanned by CamScanner

मेरी कहानी मेरी जुबानी

संपादक

सुबोध कुमार मिश्र

Scanned by CamScanner

मेरी कहानी मेरी जुबानी
© विद्योत्तमा फाउंडेशन,नाशिक

सम्पादक
सुबोध कुमार मिश्र

प्रथम संस्करण
14 सितंबर 2021

प्रकाशक,
विद्योत्तमा फाउंडेशन, नाशिक

अक्षर योजना एवं अभिन्यास
अल्टिमेट इम्प्रेशन्स
19, विकास कॉलोनी,
त्र्यंबक रोड, नाशिक - 422007
दूरभाष - 0253-2352530, 98220 17091

मूल्य : 400/-

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

१.	काजल	निलीमा भट्टाचार्य	१४
२.	बेटियोत्सव	आर्यावर्ती सरोज	२२
३.	घोषणा का जादू	सुबोध मिश्र	२७
४.	अनुभूती ही जीवनशक्ति	वृषाली काले	३४
५.	समय के पन्ने	बसंती पवार	४४
६.	तीन फूट की दूरी	डॉ. सुधा चौहान	४९
७.	तीसरा बेटा	रेनू द्विवेदी	५७
८.	तालमेल	सुधा झालानी	६२
९.	जीत एक जिद्द की	डॉ. विजेता साव	६८
१०.	आत्मकथ्य	डॉ. रोचना भारती	७४
११.	रक्तदान महादान	डॉ. बालकृष्ण महाजन	७९
१२.	मेरी साहित्यिक यात्रा	ठाकुर भरत सिंह	८४
१३.	आत्मविश्वास में छिपा है सफलता का राज	शिल्पी अवस्थी	९३
१४.	एक मुसाफिर	एन.एस.धीमान	९८
१५.	मृगतृष्णा	चंद्रिका प्रसाद मिश्र	१०३
१६.	अवचेतन मन का संकल्प	संजय द्विवेदी	११०
१७.	उत्कृष्ट दामाद	डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन	११६
१८.	छोटा शहर बड़ी सोच	रागिनी बाजपेयी	१२१
१९.	माँ...सासू माँ	नम्रता सुराणा	१२७
२०.	परिश्रम का प्रकाशपर्व	जयश्री कावडे	१३२
२१.	दादा की मनौती	डॉ. भावना सावलिया	१३७
२२.	कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती	सुवर्णा जाधव	१४३
२३.	सच हुए सपने	डॉ. प्रमोद कुमार सिंह	१४९
२४.	पांचसौ का नोट	रामकृष्ण सहस्रबुद्धे	१५३
२५.	नवजीवन	किंजल मेहता	१५६
२६.	पहली जीत	चाँदनी समर	१६२
२७.	भूली बिसरी यादें	अर्चना प्रकाश	१६७
२८.	चुनौती	जयश्री शर्मा	१७२
२९.	जीवन के रंग करोना के संग	अंजू मोटवाणी	१७६
३०.	सिर्फ साहित्य ही नही समाजसेवा भी	अंजली तिवारी मिश्रा	१८१

Scanned by CamScanner

परिचय

नाम : डॉ . भावना नानजीभाई सावलिया

माता का नाम : वनिता बहन नानजीभाई सावलिया

पिता का नाम : नानजीभाई टपुभाई सावलिया

शिक्षा : एम.ए. , एमफिल. , पी एच डी. , जी.एस.इ.टी.

व्यवसाय : अध्यापन कार्य , आर्टस कॉलेज मोडासा, जि. अरवल्ली, गुज

प्रकाशित रचनाएं :

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में 35 से अधिक शोध-पत्र प्रकाशि

50 से अधिक पद्य रचनाएं साझा संकलनों में और विभिन्न पत्रिकाओ

प्रकाशित।

प्रकाशित पुस्तकें :

(1) 'महादेवी वर्मा के समग्र साहित्य में नारी चेतना' 2013

(2) 'कविता सागर' काव्य संग्रह 2017

प्रकाश्य पुस्तकें :

हमसफ़र "स्व रचित कविता संग्रह, "साहित्यिक बिंदु" आलोचनात्मक ग्रंथ

"महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य का तात्विक विवेचन"।

सम्मान : महादेवी वर्मा मेमोरियल अवार्ड' इन्दौर, 2011

"अग्निशिखा" साहित्य गौरव सम्मान, साहित्य शिरोमणि सम्मान वर्धा,

"मातृभूमि सम्मान", "श्रेष्ठ कवयित्री" सम्मान।

'कविता सागर' काव्य संग्रह को राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय स्थान पर रा

अमृतादित्य गौरव अवार्ड, 4.'साहित्य श्री' सम्मान नासिक।

स्थाई पता : हरमडिया, वाया, ता. गोंडल, जिला -राजकोट, सौराष्ट्र (गुजर

मोबाइल - 8849842456, ईमेल : savaliabhavna501@gmail

Scanned by CamScanner

डॉ भावना सावलिया - राजकोट

मेरे छोटे भाई धर्मेश का आठ साल का बेटा वंदन मेरा भतीजा है। उसे खाना नहीं पचता था। खाना खाने के बाद पेट में दर्द होने लगता था और बदहजमी के कारण उल्टी हो जाती थी। पहले तो हमें ऐसा लगता था कि शायद वायु की समस्या होगी, यह सोचकर हम उसके खान-पान का बहुत ध्यान रखते थे। अधिकतर उसे हल्का भोजन ही दिया जाता था जो कि आसानी से पच जाए। पर उसकी तबियत अक्सर ही खराब रहती थी। आयुर्वेदिक उपचार भी बहुत किया, पर कोई फर्क नहीं पड़ा। कभी कभी मल के साथ खून भी आता था। बहुत से अनुभवी चिकित्सकों को दिखाया और दवाई की फिर भी कोई सुधार नहीं हुआ। पेट फूलता जाता। अहमदाबाद, राजकोट के नामांकित चिकित्सकों ने गुहांतदर्श (एंडोस्कोपी) किया ।

चिकित्सक ने बताया कि वंदन की आँतों में मस्से होने के कारण भोजन हजम नहीं होता है। आँतों को काटना पड़ेगा। मल-मूत्र की थैली कायम के लिए बाहर ही रहेगी। उसकी शल्यक्रिया कितनी सफल होगी उसकी भी कोई गारंटी नहीं थी। वंदन के स्वास्थ्य को लेकर हमारा पूरा परिवार चिंतित और परेशान था कि इस मासूम बच्चे का अब क्या होगा? घर में कोई ठीक से खाना भी नहीं खा पाता था। सबको वंदन की चिंता थी ।

सूरत में मेरी छोटी बहन शोभना रहती है। उसने सुझाव दिया क्यों न एक बार सूरत के किरण अस्पताल के डाक्टर को दिखाकर उनकी राय ले ली जाए। उस अस्पताल का और उनके डाक्टरों का अच्छा नाम है। देखते हैं कि वहाँ के चिकित्सक क्या जवाब देते हैं। भाई ने कहा, "ठीक है राय लेने में कोई हर्ज नहीं है। हम लोग वंदन को लेकर सूरत आए और किरण अस्पताल में जाँच

Scanned by CamScanner

करवाया तो चिकित्सक ने आश्वासन देते हुए कहा, "हम शल्यक्रिया करेंगे और वंदन को ठीक करने की जिम्मेदारी हम लेते हैं।" यह बात सुनकर हम लोगों में प्राण आ गये।

सूरत के किरण अस्पताल में वंदन के आँतों की दो बार शल्यक्रिया की गई जो सफल रहीं। हम सब लोग बहुत खुश थे। जब वंदन का फूल-सा चेहरा खिल उठता है तो घर में खुशियाँ छा जाती हैं, सबका दुलारा जो है। वंदन की अस्पताल से छुट्टी होने पर जब घर वापस आया तब उस दिन घर पर अच्छे-अच्छे व्यंजन भी बने थे। सब लोगों ने वंदन के साथ कितने दिनों के बाद चैन से खाना खाया था।

जब तीसरी बार वंदन के आँतों की शल्यक्रिया की गई तब उसकी तबीयत थोड़ा नाजुक हो गई थी। दो घंटे तक उसकी शल्यक्रिया चली थी। चिकित्सक ने बाईस मस्से काटे थे। वंदन के आंतों से खून निरंतर बह रहा था। चिकित्सक भी काफी चिंतित लग रहे थे। पूछने पर बस आश्वासन देते थे, कि हम पूरा प्रयास कर रहे हैं, शेष सब ईश्वर के हाथ में है। हम सभी घबड़ा गए थे। हमारा सारा परिवार भगवान से दुआ माँग रहा था। सब लोग एक दूसरे को देखकर कुछ नहीं कह पा रहे थे। परिस्थिति ऐसी थी कि कौन किसको सांत्वना दें ? सबको भगवान पर भरोसा था।

मेरे पापा के चेहरे पर चिंता के बादल छा गए थे। इस समय पापा ने आँखें बंद करके दोनों हाथ जोड़कर भगवान से प्रार्थना की, " हे प्रभु ! तुम मेरी लाज रखना, मेरा पोता ठीक हो जाए तो मैं बीस किलो घी का चढ़ावा अर्पण करूंगा और जब तक मैं आपको यह चढ़ावा अर्पण नहीं करूंगा तब तक मैं अपने गांव में क़दम नहीं रखुंगा।" मेरे पापा को भगवान पर अटूट विश्वास था। भगवान ने पापा की सुन ली।

Scanned by CamScanner

दो घंटे के बाद चिकित्सक ने मुसकुराते हुए कहा, "दादा, बेटा अब खतरे से बाहर है, चिंता की कोई बात नहीं है।" पापा ने हाथ जोड़कर भगवान का आभार प्रकट किया और उनकी आँखों से हर्ष के आँसू बहने लगे। "हे प्रभु! तू कितना दयालु है! हे प्रभु किसी पर भी इस प्रकार की मुसीबत ना आए ऐसी मेरी प्रार्थना है।"

पाँच दिन के बाद अस्पताल से छुट्टी मिल गई। सबकी खुशियों का ठिकाना नहीं था। बेटा गंभीर बीमारी से बाहर निकल आया था। वंदन जो सबकी आँखों का तारा था, सबका दुलारा था। मेरे माँ बार बार उसे चूम लेती और भगवान को हाथ जोड़ धन्यवाद देती कि तूने मेरा वंदन ठीक करके हमें वापस दिया।

सूरत से जब हम लोग अपने गांव वापस जा रहे थे तब पापा ने मेरे छोटे भाई धर्मेश को अपने संकल्प के बारे में बताया, "मैंने दानीधार के मंदिर में बीस किलो घी के चढ़ावे की मनौती रखी है, वह हम कब पूरी करेंगे? जब तक यह मनौती पूरी नहीं होगी तब तक मैं गांव में क़दम नहीं रखुंगा और गांव का पानी ग्रहण नहीं करूंगा।" तब मैंने मेरे अंतर्मन की बात पापा के सामने रखी, "पापा मैं आपसे कुछ बात कहना चाहती हूँ, यदि आपको योग्य लगे तो?" पापा ने कहा, "आज तक मैंने कभी भी तेरी बात टाली नहीं है तो आज कैसे टाल सकता हूँ ? कहो, "मैंने कहा- "पापा यह घी हम मंदिर में न चढ़ाकर हमारे खेतों में और हमारे आसपास की सड़कों पर काम करने वाले गरीब मजदूर लोगों को बाँट दे तो ज्यादा अच्छा रहेगा। उन लोगों के दिल का दीप जलेगा और सही जगह पर भगवान का प्रसाद पहुँचेगा। वो गरीब लोग खुश होकर हमको दिल से दुवाएँ देंगे। मंदिर में तो अविरत दान का प्रवाह बहता ही रहता है। वहाँ भगवान को प्रसाद बहुत मिल जाते हैं। इधर वो भी भगवान की

Scanned by CamScanner

आत्मा के ही अंश है जो भूखे हैं, उनके बच्चों को घी नसीब नहीं होता। जिनको प्रसाद की सच में जरूरत है उन्हें दे दिया जाए तो भगवान बहुत खुश होंगे।"

मेरी बात सुनकर पापा दो मिनट तक सोचने लगे। बाद में भैया-भाभी और माँ को पूछा, "भावना की बात के बारे में आप लोगों की क्या राय है?" सब लोगों ने मेरी बात का पूरा समर्थन किया। मुझे बहुत सुकून मिला।

सूरत से वंदन और हम सब लोग वापस अपने गाँव हरमडिया आ गये। हरमडिया राजकोट जिला के गोंडल तालुका का एक छोटा-सा गाँव है। जो सूरत से पांच सौ किलोमीटर की दूरी पर है। सूरत से आने के बाद चार दिन तक पापा गाँव से बाहर मेरी बड़ी बुआ के घर खरेडी नामक गाँव में रहे। चौथे दिन पापा ने भगवान की बीस किलो घी की मनौती पूरी की।

घर में सवा दो किलो घी के लड्डू का प्रसाद बनाया गया। वह प्रसाद कौटुंबिक सदस्यों और पड़ोस में बाँट दिए गये। बाकी का घी खेतों में और रोड पर काम करने वाले मजदूरों को बांट दिया। पापा तब बहुत खुश थे। पापा की खुशी देखकर मुझे सुकून की अनुभूति हो रही थी। पापा और धर्मेश दोनों मजदूरों को घी का प्रसाद देकर वापस लौटे तब पापा की आँखों में एक नई चमक और चेहरे पर खुशी का भाव था। उस दिन पापा को कुछ अच्छा और सही किए होने का अलग अनुभव हो रहा था। पापा ने बताया, "हम जब मजदूर लोगों को प्रसाद दे रहे थे तब उनके चेहरे पर खुशी का ठिकाना नहीं था। वे बोल रहे थे, "हमने तो कितने दिनों से घी नहीं देखा है।" एक मजदूर ने कहा : "आज हमारे घर में बढ़िया खाना बनेगा और थोड़ा घी मुन्नू के लिए रखेंगे। हम रोज़ थोड़ा-थोड़ा खिचड़ी में मिलाकर उसको खिलाएंगे।" मजदूर के बच्चे भी बहुत खुश थे। पापा को उस समय हर बच्चे में अपना पोता वंदन का दर्शन हो रहा था। नसीब की बलिहारी देखिए एक वंदन की सलामती के

Scanned by CamScanner

लिए और उसकी आयु के लिए दूसरे वंदन को खिलाया जाता है और उनकी दुआओं से दूसरों की जिंदगी उबर जाती है।

आज वंदन बिल्कुल स्वस्थ है। अब हम लोग प्रसाद मंदिर में न देकर भूखों को देते हैं। खेत में काम करनेवाले मजदूरों के बच्चों को हम हर साल शीत की ऋतु में कपड़े देते हैं। हर एक पर्व -त्योहार पर पापा सबको मिठाई और नमकीन देते हैं। पापा का यह कार्य मुझे बहुत अच्छा लगता है। हमारे खेत में काम करनेवाले मजदूरों के बच्चों की पढ़ाई का खर्चा धर्मेश उठाता है। हमारे घर में खाने में कुछ वानगी बनती है तो उन बच्चों को खाने का उतना ही हक बनता है जितना हमारे बच्चों का होता है। मैं जब छुट्टियों में गाँव जाती हूँ तब मैं उन लोगों के बीच रहती हूँ। उनके बच्चों के साथ समय बिताना मुझे अच्छा लगता है।

इस संस्मरण के माध्यम से मैं बस इतना ही कहना चाहती हूँ कि दान हमेशा जरूरतमन्द और सुपात्र को ही दें, उनकी दुवाएं सीधे ईश्वर का वरदान होती हैं। गरीब जरूरतमन्द लोग दिल के सच्चे होते हैं। हर इंसान ईश्वर का रूप होता है। ईश्वर स्वयं गरीब का रूप धारण कर हमारी परीक्षा लेता रहता है, हम ही समझ नहीं पाते हैं और प्रदर्शन करते हुए मंदिर - मजार पर चढ़ावा चढ़ाते रहते है।

Scanned by CamScanner